

वानिकी सांख्यिकी

वानिकी निवेश तथा विकास कार्यक्रमों पर योजना, नीति विश्लेषण तथा निर्णय लेने के लिए विभिन्न एजेन्सियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर विश्वसनीय वानिकी सांख्यिकी की आवश्यकता होती है। सांख्यिकी की आवश्यकता कार्यक्रमों एवं नीति के प्रभाव के मूल्यांकन तथा निरीक्षण के लिए भी होती है। इस सूचना को एक स्थान पर उपलब्ध कराने के लिए वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार परियोजना (फ्रीप) के अन्तर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में सांख्यिकी निदेशालय सृजित किया गया। सांख्यिकी निदेशालय द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कार्य इस प्रकार हैं:

- एकत्रित किए जाने वाले प्रारम्भिक एवं द्वितीयक वानिकी आँकड़ों की पहचान करना तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के साथ सहमत होना।
- प्रारम्भिक और द्वितीयक आँकड़ों को एकत्र करने वाली सम्बद्ध एजेन्सियों के साथ सम्पर्क करना।
- आँकड़े एकत्र करना, मिलान करना तथा सहमत हुए आँकड़ों का विश्लेषण करना।
- आँकड़ों की विश्वसनीयता की जांच करना।
- यथोचित समय पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय अथवा अन्य प्राधिकृत उपयोग कर्ताओं को वांछित आँकड़े उपलब्ध कराना।

भारत की वानिकी सांख्यिकी

(क) भारत की वानिकी सांख्यिकी, 1988-94

भारत की वानिकी सांख्यिकी 1988-94 के संकलन के लिए सांख्यिकी निदेशालय ने सभी राज्यों एवं संघ क्षेत्रों के वन विभागों को मानक फार्मेट भेजने का फैसला लिया। एकत्रित आँकड़ों की संवीक्षा की गयी तथा राज्य वन विभागों से परामर्श करके त्रुटियों को दूर किया गया। "फॉरेस्ट्री स्टैटिस्टिक्स इण्डिया, 1988-94" नाम से पुस्तक प्रकाशित की गयी।

(ख) भारत की वानिकी सांख्यिकी, 1996

फॉरेस्ट्री स्टेटिस्टिक्स इण्डिया, 1996 प्रकाशित करने के लिए प्रक्रिया प्रगति पर है। इस उद्देश्य के लिए निदेशालय ने जनसांख्यिकीय आँकड़ों, वन क्षेत्र और वनाच्छादन, वन क्षेत्र के विचलन, भूमि उपयोग तथा मृदा संरक्षण, वनीकरण, वन्यप्राणि, पशुधन और चारा, योजनावार प्रगति, काष्ठ आधारित उद्योग, वन उत्पाद एवं ऊर्जा खपत, राजस्व और व्यय, शिक्षा और प्रशिक्षण, संगठन, निर्यात और आयात, आर्थिक निर्देशक तथा वन रक्षण सांख्यिकी आदि के सम्बन्ध में आँकड़ों के संकलन के लिए राज्यों एवं संघ क्षेत्रों के वन विभागों को 77 मानक फॉर्मेट भेजे थे। ये फॉर्मेट, फॉरेस्ट्री स्टेटिस्टिक्स इण्डिया, 1988-94 के लिए उपयोग किए गए फॉर्मेट्स की अपेक्षा, अधिक व्यापक आधार वाले हैं। अब तक 23 राज्यों/संघ क्षेत्रों ने वांछित फॉर्मेट में अपने आँकड़े भेजे हैं। आँकड़ों की प्रविष्टि की जा रही है।

प्रकाष्ठ/बांस व्यापार बुलेटिन

उत्तरी राज्यों में फार्म वानिकी कार्यक्रमों की विफलता के मुख्य कारण अल्प आर्थिक लाभ थे। किसानों द्वारा उगाए वन उत्पादों के विपणन, फॉर्म वानिकी तथा निजी वृक्षारोपण कार्यक्रमों की सफलता के लिए, बहुत ही अहम है। इस प्रकार, बाजार विश्लेषण का महत्व तब और भी बढ़ जाता है जब किसानों के लिए अनेक किस्म के वृक्षों को उगाने के विकल्प खुले हैं। एक फसल से दूसरी फसल के लाभों का मूल्यांकन करने में किसानों के लिए विपणन सूचनाएं लाभदायक हैं। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए बाजार सूचना की जाँच और प्रसार किया जाए। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, सांख्यिकी निदेशालय प्रकाष्ठ और बांसों को कीमतों की सूची देकर तिमाही बुलेटिन प्रकाशित कर रहा है। सात प्रकाष्ठ प्रजातियों, यथा - सागौन, साल, यूकेलिप्टस, पॉपलर, कैज्वारिना, चीड़ पाइन, देवदार और वासों, को लिया जा रहा है। पूरे भारत के उन्नीस बाजारों, यथा - नागपुर, जबलपुर, रायपुर, मद्रास, कालीकट, बंगलौर, हैदराबाद, जयपुर, अहमदाबाद, दिल्ली, देहरादून, यमुनानगर, पठानकोट, जम्मू, गोरखपुर, गुवाहाटी, कलकत्ता, रांची और सिलीगुड़ी से सूचना एकत्र की गयी। निदेशालय अब तक 12 बुलेटिन का प्रकाशन कर चुका है जिसमें पहला संस्करण दिसम्बर, 94 से शुरू होकर अन्तिम सितम्बर, 97 तक है। दिसम्बर, 97 बुलेटिन के लिए आँकड़े एकत्र करने का काम प्रगति पर है।

जीव सांख्यिकीय सहायता

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के विभिन्न संस्थानों की पन्द्रह अनुसंधान परियोजनाओं को जीव सांख्यिकीय सहायता प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों यथा - जबलपुर, इलाहाबाद, शिमला और देहरादून आदि के वैज्ञानिकों को परामर्शी सेवाएं उपलब्ध कराई गई।

प्रशिक्षण

राष्ट्रीय वानिकी डाटाबेस प्रबन्धन प्रणाली (एन.एफ.डी.बी.एम.एस.)

राष्ट्रीय वानिकी डाटाबेस प्रबन्धन प्रणाली के निर्माण के लिए मैसर्स सी.एम.सी. लि० को परामर्शदाता नियुक्त किया गया तथा इस सम्बन्ध में जुलाई, 97 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। परियोजना का कार्य दिसम्बर, 97 से शुरू हुआ। इस अवधि के दौरान हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर खरीदे गए। पेन्टियम II आधारित पी सी को एक विन्डोज एन टी सर्वर के रूप में कार्य के लिए व्यवस्थित किया गया। ओरेकल वर्क ग्रुप सर्वर डाटाबेस इन्जन और ओरेकल विकास उपकरणों का उपयोग करके आँकड़ों को निर्मित करने की व्यवस्था की गई। अनुप्रयोग में एक बहु-प्रयोक्ता वातावरण का अनुरूपण देने के लिए एक नेटवर्क स्थापित किया गया, जिसे विकसित करने की योजना है।

निवेश फार्मों (उदा० आँकड़ा प्रविष्टि फार्म) को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि बहु आँकड़ा प्रविष्टि से बचा जा सके, जो कम्प्यूटर का समय बचाते हैं। निवेश फार्मों की संख्या को भी सम्भव न्यूनतम संख्या तक लाया जाएगा। परियोजना शीघ्र ही पूरी हो जाएगी।